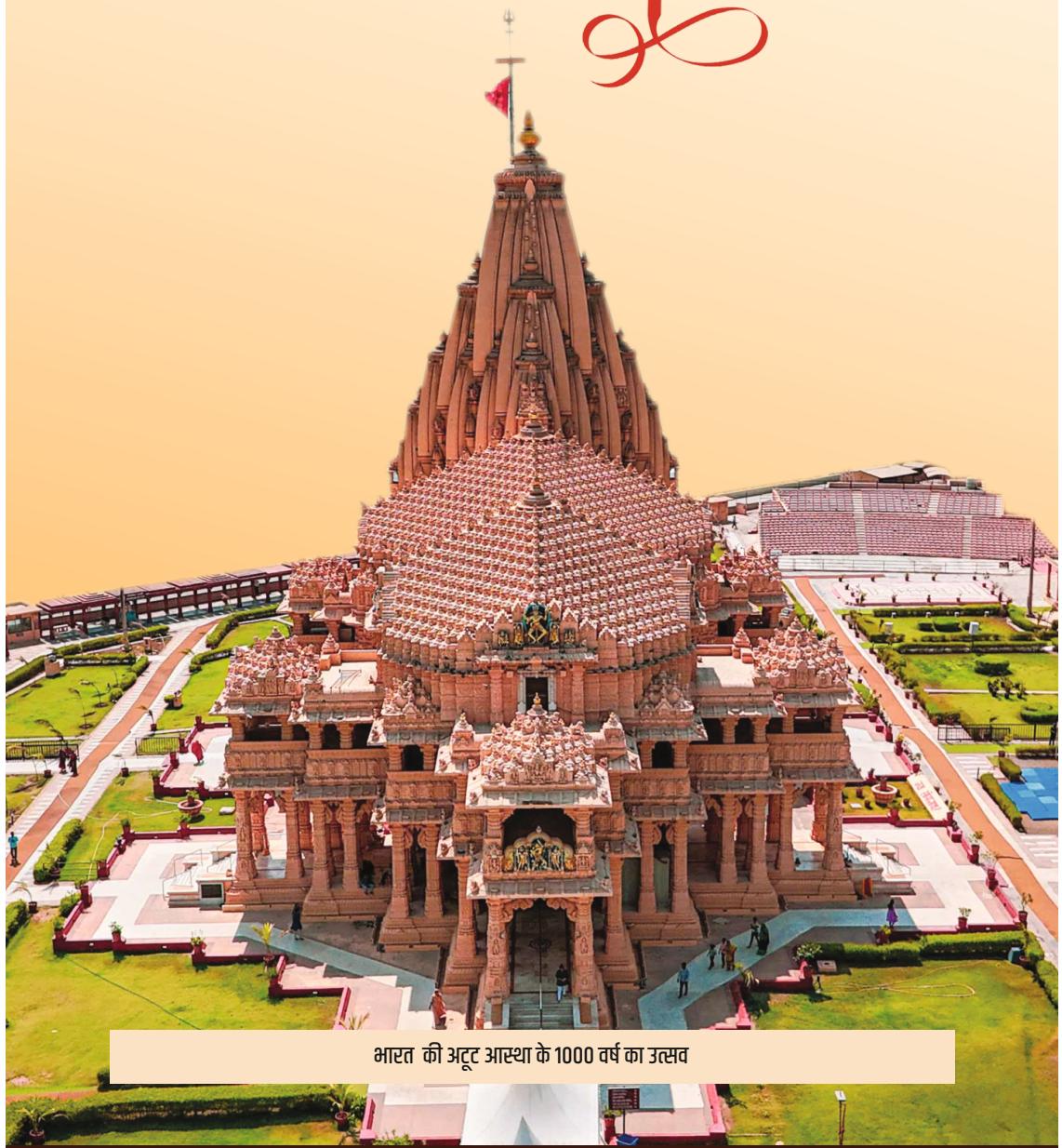


સીમનાથ દ્વામિમાન પર્વ

અટૂટ આસ્થા કી
ગૌરવ ગાથા



ભારત કી અટૂટ આસ્થા કે 1000 વર્ષ કા ઉત્ત્સવ



॥ॐ नमः शिवाय ॥



मात्राटपथर्स्तु कौन्तेय शीतोष्णासुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षास्त्व भारत ॥ 14॥

(हे कुन्तीपुत्र! शीत और उषा, सुख और दुःख के अनुभव इन्द्रियों के विषयों के संपर्क से उत्पन्न होते हैं। वे आते-जाते रहते हैं और अस्थायी होते हैं; इसलिए, हे भारत! उन्हें धैर्य और स्थिरता के साथ सहन करो।)

- श्रीमद्भगवद्गीता 2.14

यह १३०८ भारतीय आस्था और उसकी निरंतर यात्रा को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। समय के थपेड़ों को सहते हुए, सोमनाथ मंदिर ने सृजन और विनाश, श्रद्धा और विघटन, तथा पीड़ा और पुनर्स्थापिन के अनगिनत चक्र देखे हैं। इन सबके बावजूद, सोमनाथ और भारत की आत्मा अडिंग बनी रही। इसका मूल कारण रही 'तितिक्षा': वह क्षमता जिसके बल पर आघात सहते हुए भी संतुलन बनाए रखा जाता है, मूल्यों से समझौता किए बिना फिर से उठ खड़ा हुआ जाता है, और बीती कटुता में उलझे बिना भी स्मृति को जीवंत रखा जाता है।

आज जिस सहस्राब्दी का हम स्मरण कर रहे हैं, वह इसी संयम और अडिंग आस्था का प्रमाण है। जैसे श्रीमद्भगवद्गीता क्षणिक सुख-दुःख से ऊपर उठने का संदेश देती है, वैसे ही सोमनाथ का इतिहास बताता है कि भारत की दिशा अदम्य सहनशीलता, नए सिरे से उठ खड़े होने और गरिमा के साथ आगे बढ़ने के साहस से तय हुई है। इसी भावना से आज हम एक साथ आ रहे हैं, विनाश को याद करने के लिए नहीं, बल्कि सहनशीलता का सम्मान करने और भारत की आस्था की निरंतरता का उत्सव मनाने के लिए।

पवित्र स्मृति में सोमनाथः प्रथम न्योतिलिंग

प्रभासं च परिक्रम्य पृथिवीक्रमसम्भवम् ।
फलं प्राप्नोति शुद्धात्मा मृतः स्वर्गं महीयते ॥
सोमलिङ्गं नरो दृष्ट्वा सर्वपापात्प्रमुच्यते ।
लब्ध्वा फलं मनोऽभीष्टं मृतः स्वर्गं सामीयते ॥
यद्यत्कलं समुद्दिश्य कुरुते तीर्थमुत्तमम् ।
तत्तत्कलमवाप्नोति सर्वथा नात्र संथयः ॥

(जो प्रभास क्षेत्र की परिक्रमा करता है, वह सृष्टि-काल से पवित्र इस तीर्थ का पुण्य फल प्राप्त करता है; थुद्धात्मा होकर मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग में सम्मान पाता है। जो सोमलिङ्ग के दर्थन करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर अभीष्ट फल प्राप्त करता है और अंततः स्वर्ग को प्राप्त होता है। इस उत्तम तीर्थ में श्रद्धा सहित जिस फल की कामना करके कर्म किया जाता है, वह फल निश्चय ही प्राप्त होता है—इसमें कोई संशय नहीं है।)

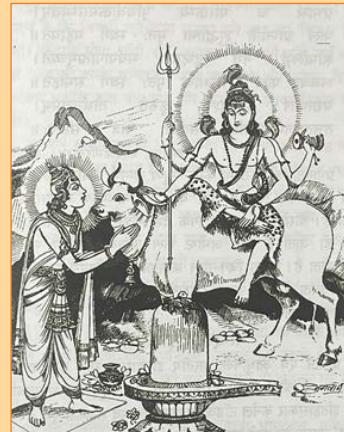
- (शिवपुराण - कोटिलदसांहिता 14, २लोक ५६-५८)

सोमनाथ- अर्थात् सोम (चन्द्रमा) के स्वामी- सौराष्ट्र के दक्षिणी तट पर स्थित प्रभास क्षेत्र में विराजमान हैं, जिसे प्राचीन काल से पवित्र माना गया है। परंपरा के अनुसार सोमनाथ बारह ज्योतिलिंगों में प्रथम है। यह स्थल वैरावल, सोमनाथ पाटन, प्रभास तथा प्रभास पाटन नैसे नामों से जाना जाता है।

प्रभास पाटन प्राचीन काल से एक पवित्र स्थल रहा है। यह वह दुर्लभ भू-दृश्य है जहाँ एक ओर भगवान शिव 'सोमनाथ' के रूप में पूजे जाते हैं, वहीं दूसरी ओर यह भूमि भगवान श्रीकृष्ण की 'निजधाम- प्रस्थान लीला' से जुड़ी हुई है। यह स्थल शैव और वैष्णव परंपराओं के एक दुर्लभसंगम का प्रतिनिधित्व करता है, जो भारतीय सभ्यता की बहुलता, बहुस्तरीयता और समावेशी प्रकृति को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, प्रजापति दक्ष के शाप के कारण जब चन्द्रदेव का तेज क्षीण होने लगा, तो समय और जीवन की गति पर संकट आ गया। इस शाप से मुक्ति पाने के लिए चन्द्रदेव ने प्रभास क्षेत्र में तपस्या की। उन्होंने सारपती नदी और समुद्र के पवित्र संगम में ठान किया और निरंतर भगवान महादेव की आराधना की।

चन्द्रमा की इस भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें पुनः तेज प्रदान किया और घटने-बढ़ने का वह क्रम स्थापित किया, जो चन्द्रमास को संचालित करता है। अपने इसी अनुग्रह के कारण, भगवान शिव यहाँ 'सोमनाथ' के रूप में प्रतिष्ठित हुए और यह प्रभास क्षेत्र एक अत्यंत श्रेष्ठ तीर्थस्थल के रूप में मान्य हुआ।



पुराणों के अनुसार सोमनाथ की उत्पत्ति
(स्रोत: द्वादश ज्योतिलिंग, गीता प्रेम, गोरखपुर)

इन किंवदंतियों से आगे भी पुरातात्त्विक साक्ष्य और सांकृतिक परंपराएँ यह दर्शाती हैं कि इस क्षेत्र में शिव की उपासना भारत के आरंभिक काल से ही चली आ रही है।

सोमनाथ: सहनशीलता और स्वाभिमान की परंपरा

सदियों से, सोमनाथ आस्था और सत्ता के मिलन बिंदु पर स्थित रहा है। राजनीतिक उथल-पुथल और परिवर्तनों के कारण, मंदिर को कई बार तोड़ा या क्षतिग्रस्त किया गया। इसके बावजूद, हर विनाश के बाद, विभिन्न शासकों, समुदायों और भक्तों ने इसका पुनर्निर्माण किया। ये घटनाएँ केवल विनाश

की कहानी नहीं है, बल्कि उस निरंतरता को दर्शाती हैं, जहाँ पवित्र स्मृति भौतिक क्षति से कहीं अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुई।

ईंटर्व्वी 1025-26 का आक्रमण एक गहरा आघात था, लेकिन यह सोमनाथ के लोप का क्षण नहीं था। मंदिर ध्वस्त किया गया, फिर भी उसकी स्मृति अमर रही। प्रभास की तीरथियां कभी बाधित नहीं हुईं, और सोमनाथ हमारी धार्मिक चेतना में निरंतर जीवंत बना रहा।

वीर हमीरजी गोहिलः इतिहास से पटे जीवित स्मृति

सोमनाथ का इतिहास केवल राजाओं, साम्राज्यों और पुनर्निर्मणों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन सांस्कृतिक कृत्यों से भी जीवंत हुआ है जिन्हें लोकस्मृति ने संहेज कर रखा है। वीर हमीरजी गोहिल ऐसे ही एक विस्मृत नायक हैं, जिनका अस्तित्व शाही इतिहास-ग्रंथों से अधिक क्षेत्रीय परंपराओं और सामूहिक चेतना में जीवित है।

सध्यकाल में सोमनाथ की रक्षा से जुड़ा उनका जीवन-संघर्ष राजधर्म के उस उच्च आदर्श को दर्शाता है, जहाँ किसी पवित्र स्थल, समुदाय और सांस्कृतिक विद्यासत की सुरक्षा को सर्वोपरि माना जाता था। वे उन अनगिनत अजात रक्षकों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनके बलिदानों के कारण, सोमनाथ की दीवारें ध्वस्त होने पर भी, उसकी चेतना और आस्था सदैव जीवित बनी रहीं।

पुनर्स्थापिन से उत्तरदायित्व तकः स्वतंत्र भारत का संकल्प

स्वतंत्रता और विभाजन की उथल-पुथल के कुछ ही महीनों बाद, 12 नवम्बर 1947 को कातिक सुदी 1, दीपावली के दिन, सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ के दरीन किए। इस ऐतिहासिक क्षण में उनके साथ नवानगर के नाम साहब श्री दिविजयसिंहजी जडेजा और के. एम. मुंशी सहित अन्य वरिष्ठ नेता उपस्थित थे। इसी अवसर पर यह महत्वपूर्ण संकल्प लिया गया कि सोमनाथ के प्राचीन मंदिर के पुनर्निर्माण का दायित्व स्वतंत्र भारत द्वारा उठाया जाएगा।

यह निर्णय केवल भावनात्मक नहीं था, बल्कि एक संगठित और संस्थागत जिम्मेदारी के रूप में उठाया गया कदम था। इस संकल्प को साकार करने के लिए एक सलाहकार समिति का गठन किया गया, एक द्रष्ट की स्थापना हुई, और एक सुव्यवसित विधिक-प्रशासनिक ढाँचा विकसित किया गया। यह प्रक्रिया स्वतंत्रता-उपरोक्त भारत की उस दूरदरिंता को दर्शाती है जिसमें आस्था और विद्यासत का संरक्षण संवैधानिक, पारदर्शी और उत्तरदायी माध्यमों से सुनिश्चित किया जाना था।

11 मई 1951 को प्रातः 9:47 बजे राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की उपस्थिति में सम्पन्न प्राण-प्रतिष्ठा समारोह ने यह स्पष्ट किया कि सोमनाथ किसी एक क्षेत्र या संप्रदाय का नहीं, बल्कि राष्ट्र की साझा सांस्कृतिक स्मृति का अंग है। इस समारोह ने प्रतिपादित किया कि सोमनाथ की विद्यासत की रक्षा करने का अर्थ अतीत में लौटना नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य के प्रति एक गंभीर दायित्व का पालन है।



સોમનાથ સ્વામિમાન પર્વ 2026: એક જીવિત વિરાસત, એક જીવંત તીર્થ

8 સે 11 જનવરી 2026 સે શુષ્ઠ હુએ સોમનાથ સ્વામિમાન પર્વ ભારત કી સભ્યતાગત યાત્રા કે દો મહત્વપૂર્ણ પડાવોં કા સ્મરણ કરાતા હૈ- ઈસ્ટ્વી 1026 મેં હુએ આક્રમણ કે એક હજાર વર્ષથા સ્વતંત્રતા કે પશ્ચાત 1951 મેં પુનર્નિર્મિત મંદિર કે પુન: ઉદ્ઘાટન કે પચાહતાર વર્ષા યહ પર્વ અક્ષય આસ્થા, નવીકરણ ઔર સંસ્કૃતિ કે સ્વામિમાન કી પુષ્ટિ હૈ।

માનનીય પ્રધાનમંત્રી શ્રી નરેન્દ્ર મોદી, જો શ્રી સોમનાથ દ્રસ્ટ કે અધ્યક્ષ બી હૈને, કે નેતૃત્વ મેં સોમનાથ અબ સમગ્ર પુનરૂદ્ધારણ કે એક નાએ ચારણ મેં પ્રવેશ કર ચુકા હૈ। મંદિર કો એક સથક્ત ઔર જીવંત આધ્યાત્મિક કેંદ્ર બનાને કે લિએ પ્રશાસનિક સુધાર, બુનિયાદી ઢાંચે કા સુદૃઢીકરણ, વિરાસત કા સંરક્ષણ ઔર સાંસ્કૃતિક પહુલોની ગઈન્હેં। યે પહુલોને, જિનમેં નિરંતરતા ઔર સમાવેશન પર બી જોર દિયા ગયા હૈ, ડસ બાત કા પ્રમાણ હૈને કે હમારે સભ્યતાગત મૂલ્ય સમકાળીન ઉત્તરદાયિત્વ કે ઠપ મેં અભિવ્યક્ત હો રેણું હૈને।

સોમનાથ સ્વામિમાન પર્વ સાંસ્કૃતિક, આધ્યાત્મિક ઔર શૈક્ષિક ગતિવિધિઓ કે દ્વારા સમાજ કો ઉસકી ગણ્યી વિરાસત સે પુન: પરિચિત કરાતા હૈ। સોમનાથ અબ કેવળ એક પુનર્સ્થાપિત મંદિર હી નહીં, બલ્કિ એક જીવંત તીર્થની ઠપ મેં સ્થાપિત હૈ, જો મૂલ્યોં, સ્મૃતિ ઔર ઉત્તરદાયિત્વ કી નિરંતર ધારા કા પ્રતીક હૈ।

જય સોમનાથ!





मंदिर उपासना, पवित्र भूगोल एवं तीर्थयात्री सुविधाएँ

दर्थन एवं पूजा के शुभ समय

- प्रातःकालः प्रातः 7:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक - अभिषेक, बिल्व पूजा एवं ठद्राभिषेक के लिए विशेष उपयोग से शुभ
- सायंकालः सायं 4:00 बजे से 7:00 बजे तक - संध्या पूजा और दीप-दर्थन के लिए सर्वोत्तम समय, जब मंदिर क्षितिज पर समुद्र में दूबते सूरज के साथ एकाकार हो जाता है।

सोमनाथ के प्रमुख पर्व

- महाशिवरात्रि - भगवान शिव से संबंधित वर्ष की सर्वाधिक पावन रात्रि, जिसमें रात्रि भर चलने वाली पूजा के लिए लाखों श्रद्धालु आते हैं
- कातिंक मेला - कातिंक मास में तीर्थयात्रा और पवित्र स्नान से जुड़ा पर्व
- जन्माष्टमी - प्रभास क्षेत्र और समीपवर्ती भूभागों के साथ श्रीकृष्ण के संबंध का स्मरण

प्रभास क्षेत्र के प्रमुख तीर्थ

- अग्निकुंड - अनुष्ठानों से जुड़ा पवित्र अग्नि-तीर्थ
- अहिल्याबाई होल्कर मंदिर - सोमनाथ के ऐतिहासिक पुनर्जागरण से संबंधित
- प्राची त्रिवेणी - पितृ कर्म से जुड़ा संगम स्थल
- यादवस्थली - यादव वंश के अंतिम चरण से संबंधित स्थल
- बाण तीर्थ - तपस्या और पवित्र स्मृति से जुड़ा तीर्थ
- भालका तीर्थ - श्रीकृष्ण के देहोत्सर्ग का स्थल, उनके शाश्वत धार्म में प्रस्तावन का प्रतीक
- प्रभास के अन्य प्राचीन मंदिर - इस क्षेत्र की निरंतर पवित्र उपस्थिति को दर्शाते हैं

निकटवर्ती महत्वपूर्ण तीर्थस्थल

- गोरखमणि - नाथ योग परंपराओं से संबंधित
- प्राची - प्राचीन पवित्र नदी-मार्ग एवं अनुष्ठानिक क्षेत्र
- मूल द्वारका - श्रीकृष्ण परंपरा के प्रारंभिक चरण से जुड़ा स्थल
- सूत्रपाड़ा - तीर्थमार्गों से संबंधित ऐतिहासिक तटीय बस्ती
- चेला सोमनाथ - सोमनाथ के पवित्र भूगोल से जुड़ा क्षेत्रीय तीर्थ
- द्वारका धार्म - चार धार्मों में से एक, जो भारत के पश्चिमी अक्ष को पूर्ण करता है

आवागमन के साधन

- टेल: वैदिक टेलवे स्टेशन निकटतम टेल केंद्र है
- सड़क: गुजरात के प्रमुख नगरों से राष्ट्रीय एवं राज्य राजमार्गों द्वारा सुगम संपर्क
- वायु: निकटतम हवाई अड्डे दीव और राजकोट में स्थित हैं, जहाँ से सड़क मार्ग द्वारा आगे की यात्रा संभव है

ठहरने की सुविधाएँ

- सोमनाथ मंदिर द्रस्ट की आवास व्यवस्था - स्वच्छ, किफायती और तीर्थयात्रियों के लिए उपयुक्त सुविधाएँ
- निकटवर्ती होटल एवं धर्मशालाएँ - विभिन्न बजट और आवश्यकताओं के अनुकूल अनेक विकल्प

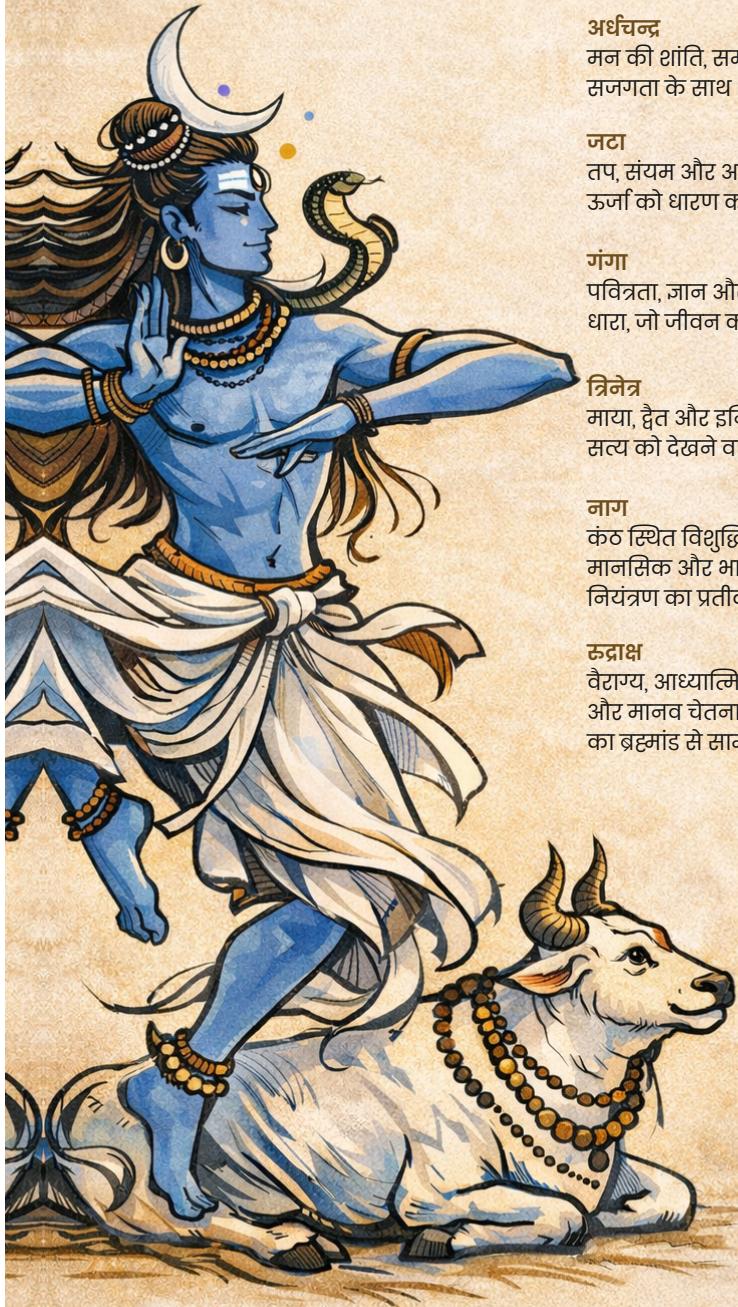
सोमनाथ के बाहर एक स्थान नहीं, बल्कि एक परित्र परिसर है, जहाँ दर्थन, स्नान, स्मृति और यात्रा मिलकर तीर्थकापूर्ण अनुभव कराते हैं।



भगवान्

शिव

से जुड़े प्रतीक
और उनके अर्थ



अर्थचन्द्र

मन की शांति, समय की लय और पूर्ण
सजगता के साथ आंतरिक उल्लास का प्रतीक।

जटा

तप, संयम और अपार आध्यात्मिक
ऊर्जा को धारण करने की क्षमता का प्रतीक।

गंगा

पवित्रता, ज्ञान और कठुणा की
धारा, जो जीवन को थुद्ध करती है।

त्रिनेत्र

माया, द्वैत और इन्द्रिय की सीमाओं से परे जाकर
सत्य को देखने वाली जागृत दृष्टि का प्रतीक।

नाग

कंठ स्थित विशुद्धि चक्र के माध्यम से शारीरिक,
मानसिक और भावनात्मक विषैले प्रभावों पर
नियंत्रण का प्रतीक।

ङ्गाक्ष

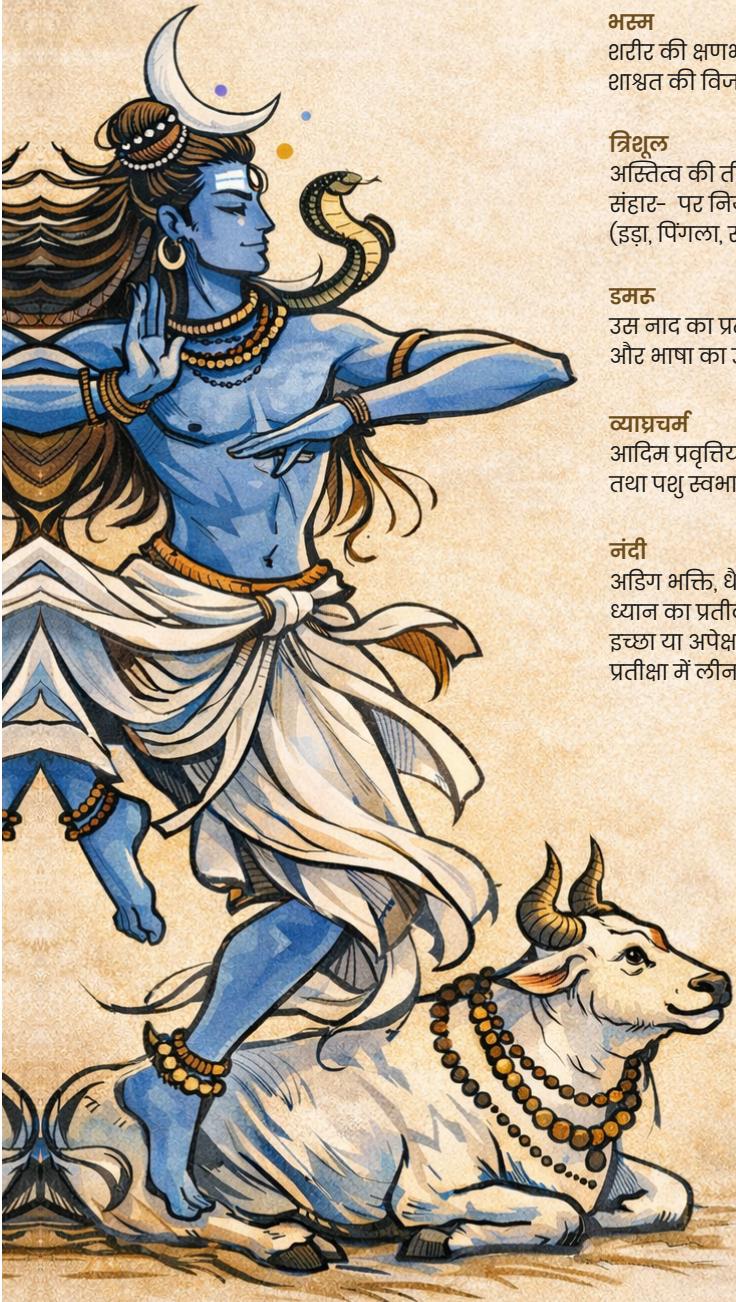
वैराग्य, आध्यात्मिक अनुशासन
और मानव चेतना
का ब्रह्मांड से सामंजस्य दर्शाता है।



भगवान्

शिव

से जुड़े प्रतीक
और उनके अर्थ



भट्टम्

शीर की क्षणभंगुरता और नश्वर पर
शाश्वत की विजय का प्रतीक।

त्रिथूल

अस्तित्व की तीन शक्तियों - सृष्टि, पालन और
संहार- पर नियंत्रण तथा ऊर्जा के संतुलन
(इडा, पिंगला, सुषमा) का संकेत।

डमठ

उस नाद का प्रतीक जिससे सृष्टि
और भाषा का उद्भव होता है।

व्याघ्रचर्म

आदिम प्रवृत्तियों और वासनाओं पर विजय,
तथा पशु द्वचाव पर नियंत्रण का प्रतीक।

नंदी

अद्वितीय भक्ति, धैर्य और सजग
ध्यान का प्रतीक- विना किसी
इच्छा या अपेक्षा के शांत
प्रतीक्षा में लीना।



























12 ज्योतिलिंग



सोमनाथ



मल्लिकार्जुन



महाकालेश्वर



ओंकारेश्वर



केदारनाथ



भीमाशंकर



काशी विश्वनाथ



त्र्यंबकेश्वर



तैयनाथ



नागेश्वर



रामेश्वरम्



घृणोश्वर

